

Chapter 8

Question: Why do we feel shy?

प्रश्न : हम शर्माते क्यों हैं?

Krishnamurti: It is good to be a little shy, is it not? A boy or a girl who is just pushing everyone without reservation, without a sense of hesitation, is not as tender and sensitive as a shy person. A little shyness is good because that indicates sensitivity. But to be very shy implies also self-consciousness, does it not? What does the word self-conscious mean? To be conscious of oneself, to be conscious of one's person, to be conscious of one's own dignity. Such a person is shy in the wrong way because he is the centre of comparison. He is the centre from which he looks out. When a boy is always comparing himself with somebody, he becomes self-conscious, he is conscious of himself.

Most young people are self-conscious; as they grow to adulthood, they feel a little awkward, a little shy and sensitive. I think one has to have throughout life that sensitivity, that sense of being tender, being slightly timid, because that implies great sensitivity. This is denied when I say, 'I belong to this class; I have position, authority; I am somebody.' When you think you are somebody, you have lost all sensitivity, all tenderness, and the beauty of being timid goes out of life. You know, one must be hesitant, timid, to inquire, to find out. If you can be hesitant in approach, very sensitive, then you will find out the whole complication, the beauty, the struggle of life. But without that feeling of hesitancy,

कृष्णमूर्ति : थोड़ा-बहुत शर्माना तो अच्छी बात है, है न? जो बालक-बालिकाएं बिलकुल संकोच नहीं करते, जिन्हें जरा सी भी हिचक महसूस नहीं होती--वे किसी शर्मीले व्यक्ति की तरह मृदुल और संवेदनशील नहीं हुआ करते। थोड़ा-सा शर्मीलापन अच्छा होता है क्योंकि यह संवेदनशीलता का सूचक है। किंतु बहुत अधिक शर्मीलापन भी स्व-केंद्रित होने का सूचक होता है, है न? स्व-केंद्रित शब्द का अर्थ क्या है? अपने आप पर अधिक ध्यान देना, अपनी वैयक्तिकता, अपनी शान की तरफ तवज्जो देना। ऐसे व्यक्ति का शर्मीलापन गलत ढंग का होता है क्योंकि वह अपने आपको तुलना का केंद्र बना लेता है और शर्म अनुभव करता है। वह अपने आपको केंद्र मानकर उस केंद्र के द्वारा बाहर देखता है। जब कोई लड़का सदैव अपनी तुलना किसी से करने लगता है तो वह संकोचशील हो जाता है, वह अपने आप पर आवश्यकता से अधिक ध्यान दे रहा होता है।

तरुण अवस्था में अधिकतर लोग संकोची होते हैं, जैसे-जैसे वे युवावस्था की ओर आगे बढ़ते हैं, वैसे-वैसे थोड़े विचित्र स्वभाव के होने लगते हैं, वे कुछ शर्मीले और संवेदनशील होने लगते हैं। मुझे लगता है कि उस प्रकार की संवेदनशीलता, वैसी मृदुता, थोड़ी-सी हिचक होना, अपने पूरे जीवन में थोड़ी सी झिझक रहने देना अच्छा होता है क्योंकि यह प्रगाढ़ संवेदनशीलता का द्योतक है। किंतु जब मैं कहता हूं, 'मैं इस वर्ग से संबंधित हूं, मेरा एक विशिष्ट स्थान, प्रतिष्ठा है, अधिकार है, मैं कुछ हूं' तो वह संवेदनशीलता गायब हो जाती है। जैसे ही आपमें यह भाव आता है कि आप कुछ खास हैं, आपकी संवेदनशीलता खो चुकी होती है, आपकी सारी कोमलता और उस संवेदनशीलता से आनेवाला सौंदर्य जीवन से विदा हो चुका होता है। आप जानते ही होंगे कि अन्वेषण करने के लिए, खोज कर सकने के लिए मनुष्य में थोड़ी झिझक, थोड़ा संकोच अवश्य होना चाहिए। यदि आपके तौर-तरीकों में थोड़ा संकोच हो, यदि आप बहुत संवेदनशील हों तो आप जीवन की सम्पूर्ण जटिलता को, सौंदर्य को, संघर्ष को जान पाएंगे।

Chapter 8

a timidity which is not tinged with fear, you will never see the delicate things of life, you will never see the trees and their shades or the bird sitting quietly on a telegraph post.

Question: How can human beings progress when there is no ambition?

Krishnamurti: Do you think inventions are the result of ambition? Do you think the inventor, the scientist who really thinks out a problem, or the true research worker has ambition? Do you think the man who invented the jet plane, the jet engine, was ambitious? He invents; then the ambitious people come along and use the invention for their purpose—to make money, to make wars, to make an end for themselves.

Have you done anything through ambition? You may have moved from here to there. You may get a better job, or a better position; you may become the principal or the governor or the collector. But is that really living, is that progress? There is the bullock cart and there is the jet plane; that is generally called progress. There has really been a tremendous progress from the bullock cart to the jet plane, from the post chaise to teletype and instantaneous communication. Our idea of progress is always in one particular direction, and we do not take into account all the implications of ambition. Suppose an oil well is discovered here. Then, what do you think will happen? There will be all the machinery of exploitation. It is not that there should not be an oil

परंतु उस प्रकार की झिझक के अभाव में, ऐसे संकोच के बिना जिसमें भय का स्पर्श तक न हो--आप जीवन की कमनीयता को कभी न देख सकेंगे--आप वृक्षों को, उनकी छायाओं को, या टेलीग्राफ के खंभे पर शांतिपूर्वक बैठे पक्षी को कभी न देख पाएंगे।

प्रश्न : यदि हममें महत्त्वाकांक्षा न हो तो हम प्रगति कैसे कर सकेंगे?

कृष्णमूर्ति : क्या आपको ऐसा लगता है कि जो अनेक आविष्कार हुए वे महत्त्वाकांक्षा के कारण हुए? क्या आप यह सोच सकते हैं कि कोई वैज्ञानिक जो वास्तव में किसी समस्या का समाधान खोजता है, या एक सच्चा शोधकर्ता महत्त्वाकांक्षा से प्रेरित हो कर ऐसा करता है? जिस मनुष्य ने जेट विमान का, जेट इंजन का आविष्कार किया क्या वह महत्त्वाकांक्षी था? वह तो बस आविष्कार करता है और फिर दूसरे महत्त्वाकांक्षी आगे बढ़ कर उस अनुसंधान का उपयोग अपने प्रयोजनों के लिए, धन के लिए, युद्ध करने के लिए, अपने जीविका निर्वाह के लिए करने लगते हैं।

क्या महत्त्वाकांक्षा के द्वारा कभी आप कुछ कर पाए हैं? शायद आप यहां से वहां पहुंच गए हों। शायद आप एक बेहतर नौकरी, एक ऊंचा पद पा सकें, हो सकता है कि आप प्रिंसिपल, गवर्नर या कलेक्टर बन जाएं। परंतु क्या यही जीवन है, क्या यही प्रगति है? एक ओर बैलगाड़ी है तो दूसरी ओर जेट विमान है, इसे ही प्रायः प्रगति कहा जाता है। यह तो मानना ही होगा कि बैलगाड़ी से जेट विमान तक आना, संदेशवाहक से तार तक की प्रगति, और फोन से तुरंत कहीं भी बातचीत संभव होना, यह सब प्रगति अविश्वसनीय सीमा तक पहुंच चुकी है। प्रगति के बारे में हमारी सोच सदा एक विशिष्ट दिशा में ही बंधी होती है, और हम महत्त्वाकांक्षा में निहित सभी अर्थों पर विचार नहीं करते। मान लीजिए कि यहां पर खनिज तेल भूमि से निकाला जा सकता है--ऐसा पता चलता है। तब, आप क्या सोचते हैं--इसका क्या परिणाम होगा? शीघ्र ही उसके दोहन के लिए सारे उपाय किए जाने लगेंगे। मैं यह नहीं कहता कि बनारस में खनिज तेल नहीं पाया जाना चाहिए, परंतु प्रगति के संबंध में सोचा यह जाता है कि

Chapter 8

field in Banaras, but the idea of progress is to use that oil and produce more and more, without understanding the whole complex problem of ambition.

Take a very simple example. A missionary in the South Seas regularly held Sunday classes and read the Bible to his parishioners. When he read the Bible stories, they listened very attentively. After some time, he thought how good it would be if they all knew how to read. So he went to America to collect money. He came back and taught them how to read and write. But, to his great disappointment, he found that they were reading comic magazines, not the Bible.

So, real progress is in what is happening to your mind. Are you making progress there, or are you just gramophone records, repeating over and over again the same old comic, tragic, or stupid stories?

Question: Why are people born in the world?

Krishnamurti: For various reasons—sex, passion, the desire to have children. It is a very simple reason. You look at a tree or a bush that flowers. Nature wants to keep on breeding its own species, does it not? You understand? The mango tree has flowers; the flower is pollinated and becomes the fruit. There is a stone in the mango and that stone you throw away; it falls in fertile soil and grows into a tree which produces many more mangoes. There is a continuity in this process, is there not? So in human beings also there is continuity in

तेल का अधिक से अधिक उत्पादन और उपयोग किया जाना ही प्रगति है, और महत्त्वाकांक्षा की समूची जटिल समस्या का स्वरूप क्या है इसे समझने का प्रयत्न तक नहीं किया जाता।

एक साधारण-सा उदाहरण देखें। दक्षिणी समुद्र तटीय क्षेत्रों में एक मिशनरी धर्म-प्रचारक, चर्च में आने वालों को नियमित रूप से प्रति रविवार को बाइबल पढ़कर सुनाया करता था। जब वह बाइबल की कथाएं सुनाता तो लोग बहुत ध्यानपूर्वक उन्हें सुनते थे। कुछ समय बाद उसके मन में यह विचार उठा कि कितना अच्छा होता यदि ये सब लोग पढ़ पाते तो कितना अच्छा होता। इस उद्देश्य के लिए पैसा जमा करने वह अमेरिका गया। वह वहां से वापस लौटा और उन लोगों को पढ़ना-लिखना सिखाया। परंतु बाद में उसे यह देख कर बहुत निराशा हुई कि वे लोग बाइबिल नहीं बल्कि कॉमिक्स पढ़ रहे थे।

इसलिए सच्ची प्रगति इस बात में है कि आपके मन में क्या हो रहा है। क्या उस तल पर आप प्रगति कर रहे हैं, या आप बस ग्रामोफोन के रिकॉर्ड बन कर रह गए हैं और उन्हीं पुरानी, हास्यप्रद, त्रासदी या मूढ़ताभरी कहानियों को दुहरा रहे हैं?

प्रश्न : दुनिया में लोग किसलिए जन्म लेते हैं?

कृष्णमूर्ति : इसके अनेक कारण हैं--सेक्स, वासना, बच्चों की कामना आदि। यह एक सबसे सरल कारण है। आप देखते हैं कि पेड़ों पर या झाड़ियों में फूल आते हैं। प्रकृति चाहती है कि अपनी प्रजातियों में निरंतर वृद्धि होती रहे। आप समझ रहे हैं न? आम के वृक्ष पर बौर लगते हैं, फूलों में परागण होता है और फिर फल आते हैं। आम के फल में गुठली होती है जिसे आप फेंक देते हैं, जब वह उपजाऊ जमीन पर गिरती है तो उग कर एक वृक्ष बन जाती है जिसमें और भी बहुत से आम लगते हैं। यह एक प्रकार की अनवरत प्रक्रिया है, है न? इसी प्रकार मनुष्यों में भी अपनी प्रजातियों की वृद्धि की एक सतत प्रक्रिया चलती रहती है। परंतु आम के वृक्ष आपस में लड़ते-झगड़ते नहीं, बाघ एक-दूसरे का वध

Chapter 8

the species. But the mangoes do not fight among themselves; tigers do not kill each other; only we human beings destroy each other; we are the only species that kill each other, and the capacity to kill is, by us, called progress. Is this progress?

Comment+: Some say, 'Mystery, thy name is woman.'

Krishnamurti: Is this a conundrum or a puzzle that you are asking me? Do you know what a conundrum is? It is a puzzling question which you have to think over and work out. Why do you bother about all this? You see, first we read something in a book and then we try to work it out. Some say, 'Mystery, thy name is woman.' What does that mean? Women are not such mysterious organisms, are they? The real mystery is not that. But we are satisfied with superficial mysteries, we like a conjurer, a dark room, mysterious people. We look for mysteries. But, there are no mysteries. What we think are mysteries are all inventions of the mind.

If you can understand the workings of the mind and go beyond them, there is the real mystery. But very few of us go beyond and reach that mystery. You are all satisfied with the superficial mysteries of a detective story or of a shrine. If one can understand the workings of one's own mind and go beyond that, then one will find extraordinary things.

Question: How do we dream?

नहीं करते, केवल हम मनुष्य नामक जीव ही एक दूसरे का संहार करते हैं, हम ही ऐसी प्रजाति हैं जो एक-दूसरे की हत्या करते हैं, और अपनी संहार क्षमता की वृद्धि को हम प्रगति कहते हैं। क्या यही प्रगति है?

श्रोता : कुछ लोग कहते हैं कि स्त्री का दूसरा नाम है रहस्य।

कृष्णमूर्ति : आप मुझसे जो पूछ रहे हैं वह कोई गूढ़ पहेली है या समस्या है? आप जानते हैं कि पहेली किसे कहते हैं? यह ऐसा उलझावभरा प्रश्न होता है जिसे सुलझाने के लिए बहुत सोचना होता है। आप इन व्यर्थ की बातों की ओर ध्यान क्यों देते हैं? देखिए, पहले तो हम किसी किताब में कुछ पढ़ लेते हैं और फिर उस बारे में खोजकर उसका पता लगाने की कोशिश करने लगते हैं। कुछ लोग कहते हैं, 'स्त्री का दूसरा नाम है रहस्य'—इसका क्या मतलब है? स्त्रियां कुछ ऐसी रहस्यमय जीव नहीं होतीं, या होती हैं? यह वस्तुतः कोई रहस्यमय बात नहीं है परंतु हम कृत्रिम रहस्यों से संतुष्ट हो जाया करते हैं, हमें जादूगर अच्छा लगता है, अंधेरा कमरा, रहस्यमय लोग आकर्षित करते हैं। हम रहस्यों की तलाश में रहते हैं। परंतु रहस्य तो होते ही नहीं। जिन्हें हम रहस्य समझते हैं वे सब केवल मन के ही आविष्कार होते हैं।

यदि आप मन की गतिविधियों को समझ सकें एवं उनसे पार जा सकें तो आप पाएंगे कि सही मायने में एक रहस्य है। परंतु हममें से कुछ ही उनके पार जाते हैं और उस रहस्य तक पहुंचते हैं। आप सभी की रुचि जासूसी कहानियों, पुराने मठों-मजारों के सतही रहस्यों से ही संतुष्ट हो जाया करती है। यदि कोई अपने स्वयं के मन की कार्यविधियों को समझ सके और उनसे ऊपर उठ सके तो उसे अद्भुत बातें पता चलेंगी।

प्रश्न : हम स्वप्न कैसे देखते हैं?

Chapter 8

Krishnamurti: Do you have dreams? What kind of dreams do you have? If you go to bed with a full stomach, you have some kind of dream. There are various other kinds of dreams.

What do you think dreams are? A dream is a very complex thing. Even while you are awake, while you are wandering along a street or sitting quietly, you may be dreaming because your mind is thinking of various things. You may be sitting here, but you think you are in your home, and you imagine what your mother is doing, or what your father is doing, or what your younger brother is doing. That is a kind of dream, is it not? Though you are sitting quietly, your mind is off, imagining, speculating, wandering.

Similarly, when you are asleep, your mind goes off, imagining, wandering, speculating. Then there are dreams born out of your deep unconscious. And there are dreams which foretell, which give you a warning, which give you hints. It is possible for human beings to have no dreams at all but to sleep very profoundly, and in the deep profundity, to discover something which no conscious or unconscious mind can ever discover, an intimation of something which no mind can ever conjure up.

The mind is such an extraordinary thing. You spend eighteen or twenty years learning the same subjects and passing several examinations, but you do not spend an hour or even ten minutes to understand this extraordinary thing called the mind. Without

कृष्णमूर्ति : क्या आप स्वप्न देखते हैं? आप किस प्रकार के स्वप्न देखा करते हैं? यदि आप भरपेट भोजन करके सो जाते हैं तो आपको किसी विशेष तरह के स्वप्न दिखाई पड़ते हैं। स्वप्न अनेक तरह के होते हैं।

स्वप्न क्या होते हैं? आप क्या सोचते हैं? स्वप्न एक बहुत जटिल चीज़ है। यहां तक भी संभव है कि जब आप जाग्रत होते हैं, जब किसी सड़क पर से जा रहे होते हैं या चुपचाप बैठे हुए होते हैं तो आप स्वप्न देखने लगते हैं, क्योंकि आपका मन तो अनेक बातें सोचता रहता है। आप भले ही यहां बैठे हों पर आप यह विचार कर सकते हैं मानो आप घर में बैठे हैं, और यह कल्पना कर सकते हैं कि आपकी मां क्या कर रही है, या आपके पिता क्या कर रहे हैं, या आपका छोटा भाई क्या कर रहा है। यह स्वप्न का ही एक रूप है, है कि नहीं? हालांकि आप चुपचाप बैठे हैं परंतु आपका मन भागता रहता है, कल्पना करता रहता है, अनुमान लगाता रहता है, कहीं और चला जाता है।

इसी तरह, जब आप सोये होते हैं तब भी आपका मन कहीं अन्यत्र होता है, कल्पना और अनेक ख्यालों के साथ कहीं भटकता रहता है। इसके अतिरिक्त कुछ स्वप्न ऐसे भी होते हैं जो आपके गहरे अवचेतन मन से जन्म लेते हैं। और कुछ स्वप्न ऐसे होते हैं जो भविष्य की जानकारी पहले से ही दे देते हैं, जो आपको चेतावनी देते हैं, जो आपको कुछ पूर्व-संकेत देते हैं। मनुष्य के लिए यह संभव है कि उसे बिलकुल स्वप्न न आएँ और वह बहुत गहरी नींद सो सके और उस गूढ़ गहनता में किसी ऐसे तत्व को ढूँढ़ पाए जिसे चेतन अथवा अचेतन मन कभी नहीं खोज सकता--किसी ऐसे तत्व का संकेत उसे मिले हो जिसे मन कभी नहीं रच सकता।

मन ऐसी ही अद्भुत चीज़ है। आप कुछ खास विषयों को पढ़ते हुए और अनेकों परीक्षाएं पास करते हुए अट्ठारह या बीस साल बिता देते हैं पर जिसे मन कहा जाता है उस असाधारण वस्तु को समझने के लिए आप घंटा भर या दस मिनट भी नहीं निकालते। मन को समझे बिना यदि आप अनेक परीक्षाएं पास कर भी लें, यदि आप

Chapter 8

understanding the mind, passing examinations, getting jobs, or your becoming a minister has very little meaning. It is the mind that creates illusions, and if you do not understand the maker of illusions, your life has little meaning.

Do you understand all the things that I am talking about? The difficulty is, I am speaking in English. But I doubt very much whether you would understand even if I spoke in Hindi. You would understand the words, but not the meaning, the implications that lie behind the words. You have to find out the implications by asking your teachers or your parents.

What I have said is a question of your whole existence. It is not enough to find out for a day or two; you have to find out the implications as you live, throughout life. But you cannot live, you cannot find out if you are merely driven by ambition, by fear. To find out, there must be a sensitivity, a freedom in the psyche, and all that is denied if you do not understand the workings of your mind.

Question: How should we think out any problem?

Krishnamurti: That is quite an intelligent question—how should we think out a problem? Most people want an answer to a problem. But that boy wants to know how to think out a problem—which is quite different. He is not looking for an answer; at least I hope not.

There is no answer at all to a

नौकरियां पा भी लें या मंत्री भी बन जाएं तो भी वह व्यर्थ है। मन ही भ्रांतियों को उत्पन्न करता है और यदि आप भ्रांतियों के सृजनकर्ता को नहीं समझ पाते हैं तो आपके जीवन का कोई अर्थ नहीं रह जाता।

मैं जिन चीजों के बारे में बातें कर रहा हूँ क्या आप उन सबको समझ पा रहे हैं? दिक्कत यह है कि मैं अंग्रेजी में बोल रहा हूँ। पर यदि मैं हिंदी में बोल रहा होता तो भी मुझे शक है कि आप मुझे समझ पाते। शब्दों को तो आप समझ लेंगे पर उनके अभिप्राय को नहीं—शब्दों में छिपे आशय को आप नहीं समझ पाएंगे। उनके निहितार्थ को जानने के लिए आपको चाहिए कि अपने अभिभावकों या शिक्षकों से पूछें।

मैंने जो कुछ कहा है वह आपके समूचे जीवन से जुड़ा प्रश्न है। इसे एक या दो दिनों में जान लेने का प्रयत्न करना पर्याप्त नहीं होगा, इसके गूढ़ तात्पर्यों को तो जीवन को जीते हुए ही जानना होगा। परंतु यदि आप महत्त्वाकांक्षा से प्रेरित हैं, यदि आप भय से परिचालित होते हैं, तो आप जी नहीं सकते। खोज पाने के लिए संवेदनशील होना ज़रूरी है, अंतःकरण की स्वतंत्रता ज़रूरी है और यदि आप अपने मन की कार्यविधियों को नहीं समझते तो उस संवेदनशीलता से, उस स्वतंत्रता से आप वंचित रह जाते हैं।

प्रश्न : किसी समस्या पर विचार करने का क्या तरीका होता है?

कृष्णमूर्ति : यह प्रश्न अवश्य ही एक विवेकपूर्ण प्रश्न है—हम किसी समस्या पर किस प्रकार से विचार करें? अधिकांश लोग समस्या का कोई उत्तर पा लेना चाहते हैं। परंतु वह बालक यह जानना चाह रहा है कि किसी समस्या पर चिंतन किस तरीके से किया जाता है—जो कि उससे एक बिलकुल भिन्न बात है। वह किसी उत्तर की प्रतीक्षा नहीं कर रहा है, कम-से-कम मुझे तो ऐसी ही उम्मीद है।

किसी भी समस्या का कोई उत्तर नहीं होता और

Chapter 8

problem, and so it is foolish to seek an answer. But if I know how to think out a problem, then the answer is the very thinking out of the problem. Look, sirs, you have a mathematical problem. You do not know the answer, but the answer is at the end of the book, so you keep turning to the end of the book to find the answer. But life is not like that. Nobody is going to give you the answer. If anybody thinks he can give you the answer, he is stupid. But if you know how to think out a problem, how to look at it, how to approach it, the very thinking, the very looking at it, is the solution.

You want to know how to think out a problem. The first thing, obviously, is not to be afraid of the problem. You understand? Because, if you are afraid, you won't look, you will run away from it. The second thing is not to condemn it, not to say how terrible, how awful, how miserable it is. Then, not to compare that problem with any other problem, or have a comparative value when you approach the problem. All this is a bit difficult. When you approach a problem, if you have already got a definite judgment, an answer to that problem, you do not understand the problem. So, to understand the problem, there must be no comparison, no fear, no judgment; those are the essential things which will help you to understand the problem. There are really no problems except those which are created by comparison, fear, and judgment.

Please discuss all this with your teachers and among yourselves.

इसलिए उत्तर खोजना बेवकूफी है। लेकिन अगर मुझे समस्या पर विचार करना आता है तो इस विचार करने में ही उत्तर मिल जाता है। जैसे आपके पास गणित की कोई समस्या है। आपको उसका उत्तर मालूम नहीं होता लेकिन पुस्तक के अंत में उत्तर छपे होते हैं तो उत्तर देखने के लिए आप बार-बार पुस्तक के पन्ने उलटते हैं। परंतु जीवन इस तरह की कोई चीज़ नहीं है। इसके उत्तर आपको कोई नहीं दे पाएगा। यदि कोई सोचता है कि वह आपको उत्तर दे सकता है तो वह मूर्ख है। लेकिन यदि आप यह जानते हों कि समस्या पर विचार करने का तरीका क्या है, उसका अवलोकन किस प्रकार से किया जाता है, उससे रूबरू कैसे हुआ जाता है तो चिंतन और निरीक्षण अपने आप में ही हल है।

आप यह जानना चाहते हैं कि किसी समस्या पर विचार कैसे किया जाता है। पहली बात जो बिलकुल स्पष्ट है वह है कि समस्या से भयभीत न हुआ जाए। आप समझ रहे हैं न? क्योंकि यदि आप डर जाते हैं तो आप उसका अवलोकन नहीं करेंगे, आप उससे भाग खड़े होंगे। दूसरी बात यह है कि उसकी निंदा न करें, यह न कहें कि यह कितनी कठिन है, कितनी भयावह है, कितनी कष्टप्रद है। फिर किसी समस्या से उसकी तुलना न करें या समस्या से संपर्क करते समय उसका तुलनापरक मूल्यांकन न करें। यह सब कुछ थोड़ा कठिन है। यदि समस्या से संपर्क करते समय आप पहले ही से कोई विशिष्ट निर्णय ले कर, उस समस्या का कोई तय उत्तर मानकर आगे बढ़ते हैं तो आप उस समस्या को समझ नहीं पाते। अतः समस्या को समझ पाने के लिए यह ज़रूरी है कि तुलना न की जाए, भय न हो, निर्णय न लिया जाए--समस्या को समझने के लिए ये सारी बातें अपरिहार्य रूप से सहायक होती हैं। तुलना, भय एवं निर्णय से उत्पन्न होनेवाली समस्याओं के अतिरिक्त वस्तुतः समस्याएं कहीं होती ही नहीं।

कृपया इस सब के बारे में अपने शिक्षकों से और आपस में भी बातचीत कीजिए। इन विचारों का,

Chapter 8

Let these ideas, let these words, go through your mind so that you are familiar with all these issues. Then, you will be able to face the problems of life.

इन शब्दों का अपने भीतर मनन होने दीजिए ताकि आप इन सारे मुद्दों से अवगत हो सकें। तब आप जीवन की समस्याओं का सामना करने में समर्थ हो पाएंगे।

January 13, 1954

१३ जनवरी, १९५४